







Bhadantācārya Buddhadatta Pāļi Promotion Foundation is a non-governmental educational, social and religious organization. It is completely a non-profit organization. It was founded on October 14, 2011 at Sougatageham, Umri, (Madhya Pradesh) by Dr. Prafull Gadpal with the view of propagation and promotion of Pāļi language and Buddha-Dhamma under his direction and leadership. The foundation started publishing 'Dhamma-Sandesh' journal from the time to its establishment. The main purpose of this journal is to present the humanistic-teachings of Lord Buddha in its fundamental form.

The Foundation drafts various plans & projects and tries to implement them successfully with the cooperation of its skilful members to promote the ancient and classical language Pāļi.

Although the main setup of the foundation will operate in India but it will function also in abroad, considering global-popularity and opportunities of the Pāļi language.



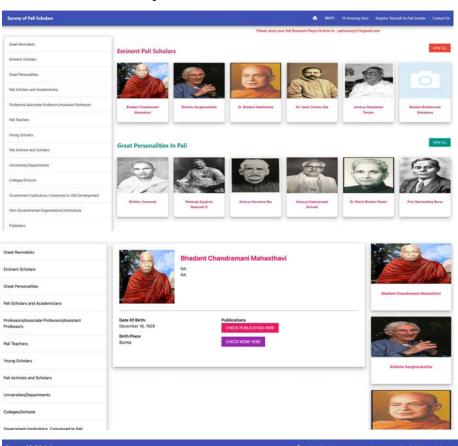
Pali Computational linguistics is the scientific and engineering discipline concerned with understanding written and spoken language from a computational perspective, and building artifacts that usefully process and produce language, either in bulk or in a dialogue setting. To the extent that language is a mirror of mind, a computational understanding of language also provides insight into thinking and intelligence. And since language is our most natural and most versatile means of communication, linguistically competent computers would greatly facilitate our interaction with machines and software of all sorts, and put at our fingertips, in ways that truly meet our needs, the vast textual and other resources of the internet.



लिपि-परिवत्तिका (Transliteration)



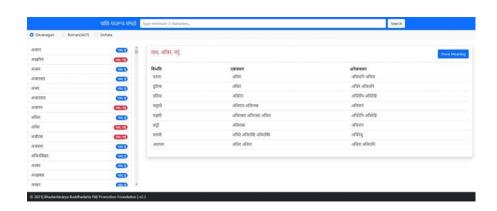
पालि-सावेक्खिका (Survey of Pali)

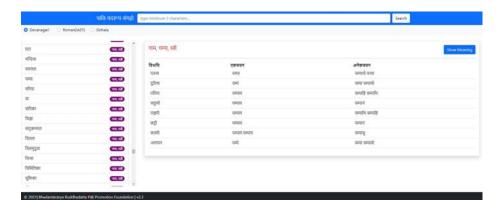




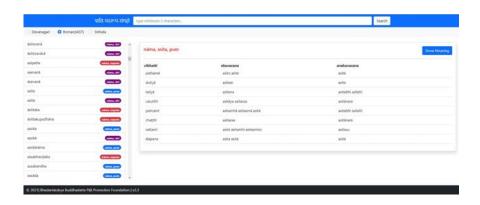
पालिपदरूपसङ्गहो (Pālipadarūpasaṅgaho)

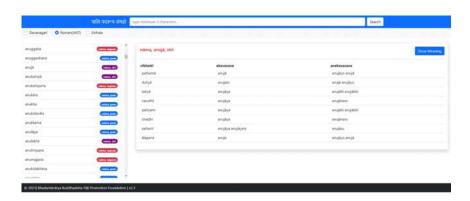


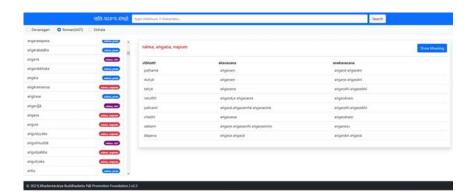




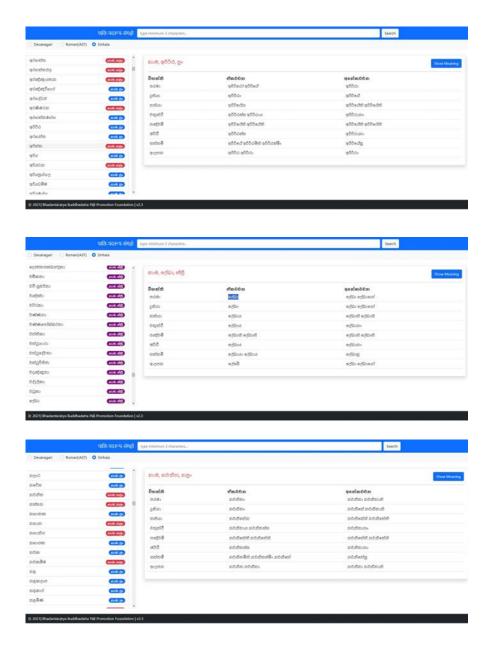
पालिपदरूपसङ्गहो (Pālipadarūpasaṅgaho) in IAST Script



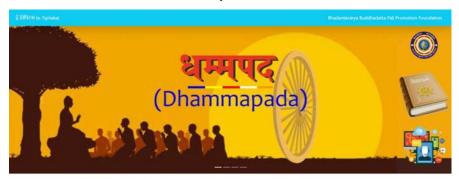




पालिपदरूपसङ्गहो (Pālipadarūpasaṅgaho) in Sinhala Script



ई-तिपिटक (e-Tipitaka)



ई-तिरिटक एक अराधुनिक एवं महाराष्ट्रा उपक्रम है। इसके अन्यर्गत विशिष्टक के समस्त प्रश्नों का कम्यूटिकाल भाषाविका की रहि से प्रमुतिकाल किया का रहा है। पाति में उपसाम बहुताकी रूपी विशिष्टक को आकराविका परिकेश से विश्वविका करते हुए कम्यूटर प्रविकार के साममा के हसमें प्रसूत किया का रहा है। इसके अन्यर्गत वृक्त माथा का साममा को महत्तु करते हुए उसका आकराविका दिए से सकत निकेश, दूरवर्षकों में अपना काहे हैं पा सिम्मिल किया जाती है। इसके बाद पर वृक्तपत्त अन्यर्गक करते काहत की स्थापति है। हिन्दी और अंकी सी अर्था दिया काहते हैं हमस्यर पहिल्दी कीर अंकी में भागार्थ प्रसूत किया काहते हैं।

हकोर पक्षात गांच था गया में आने हुए आकरणांच को कोटते हुने तरिय, हमास, कुदन, तरिया हमारि एडि से कमझने का प्रमास किया तता है। पिर अध्यक्त के मानमा से गांच में आप हुए आकरण को सुसम्भ एवं परिष्कुत किया बाता है। अध्यक्त के अनगत गांच में अभी हुए माकरणांच को विशेष उदाहरणों के द्वारा विश्वास से समझने हेतु विशेष प्रश्नों एवं तकों का प्रथमित किया जाते



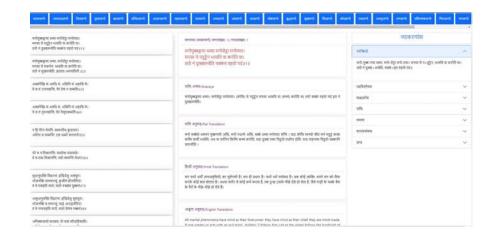
Dhammapada in a collection of 423 verses so uttered by Guidama Buddha himself to his disciples. An anthology of moral precepts and maxims, it is disided into 26 chaptes under such headers as Thought. Flowers, Clid Age, Self, Happiness, Flaestore, Argore, Thirst, Brahmana and others. Though seemingly separated across so many chapters a fundamental thread must hough all the verse, which becomes perceptible or neading the fact.

The teachings of Buddha focus on the way, the magga Clankskrift margel or path, that delivers a person from a life that is inexcapably connected with desires, initiatistics, scrows; hate and an endless cycle of Beroning. "He whose appetites are stilled, who is not absorbed in enjoyment, who has persoived void and unconditioned freedom (Nivirals," continues Buddha, This path is difficult to understand, like that of birds in the air" (No 93, Chapter VI). There is rainana (nolsha for Hindu, fana las 55th mystic), here and now, not in a supposed afterfule. Budd Mine:

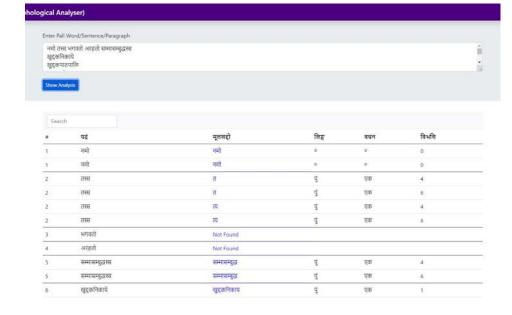
Contributors

Editor	Co-editor					
Dr. Prafull Gedpel	Vishakanand Bansod					
Type settings and Proof reading Ankit Wasnik	Technology Supports Or. Anil Kumar					

	100			100					-				-	10		
मनेपुब्बकुका प्रमा मनेनेतु मनेनकः मनतः चे पद्देन भारति चा मनेति चाः	Ì	वसन्दर्भ, वस्त्रवन्त्री, वस्त्रवेखाः, १/ राजवेखाः, १							व्याकरणीय							
तती में दूस्तामन्त्रीते चलवत वहाती घटें 11.6		मनोपुष्पञ्चमा धम्मा मनोसेष्ट्रा मनोमवाः।								पर्वतिकारी					- 3	
सनेपुष्पञ्चमा धम्मः सनेनेतुः सनेमतः। समात चे पत्रनोपः धनतिः चा अपेति च।		मनका में फ्टूडेन भावति वा करोति ता। तती नं दुक्तुमन्त्रेति कश्चेत वहती पर्देश s						पदिस्तंत्रम					-			
तते न सुक्रमधीत, ब्रायण अन्याचिनी ६२॥	_									nuceho						
अवविधित सं अविधि सं, अविधि सं अवृति से। वे च तं गुण्यमञ्जित के तेता न सम्बर्धि । ३ ।		Tife-sett, Anexys						r/t								
	_	यानेपुम्बद्भमा प्रमाः सरोनेपुः सानेपातः (क्षोपिः) सं पट्टोप समात भागति सः (क्षमा) क्षारीते सः ताले प्रकल सातने पर्द इस सं दृष्णामानेतिः						t 4	men					×		
अक्रांच्यि में आदि में, श्रांतिते में अपूर्णि में। ये च तं नुरुत्वानि, वेरे तेतुरसम्पति ३४३		gape can									BITREES					¥
		ofh ages n	i Translation								inc.					~
व हि रोटन केरान्ति कम्पानीच कृष्यकर्गः अवेदन च सम्बन्धिः इस धान्ये सन्तन्तनो १६॥		करे तन्नेत ध्यान पुम्पणने और. करे पहले और. तन्ने ध्यान स्टेयत क्रिन । यह सेवेंद्र कार्य तीत । यह स्टेवेंद्र क्रिन वार्ष भागेते, संध वा शरित क्रिकि क्रमां कांत्री, तथा हुमत तमा विट्ठाने तथारित होति, यथा वहुनका चिट्ठाने प्रकारित प्रकारित					riet rift									
को च न विकानन्ति, संपर्वतः चनानको। ये च तथा विकानन्ति, तथो जन्मन्ति नेपणान्छ।																
		हिन्दी अनुसद्भानता Translation														
कुचनुर्वतिव विश्वन्तं, श्रीकोण् असंदुर्गः भोजन्तिक् चामसाम्यु कुसीतं शीनवीरीयः। तं से पास्ति चारो, साले सम्बाद कुसार्गः।		मन कभी धर्मी हमन व्यक्तियों, का पूर्वनात्री है। मन ही प्रधान है। यानों धर्म मनोवाद है। यान कोई व्यक्ति अपने मन को मैता कनके आई कत कीतात है। अध्या कोट से आई कमों बनता है. तब दुःख प्रस्तेन पीचे ऐसे हो तेता है. येसे न्यूटी के पत्रके केट के ऐसे के पीच-पीच हो तेते हैं।						tei de								
अनुभागुर्वोशं विदारनः इन्दियेतु सृतंतुर्वः भोजपन्ति च मानान्तुं ज्ञद्धं अनद्धवितिः तं वे नामशाहीतं मारो, वातो तेतीय पत्रवर्वतः		स्था न्यूपर	English Transi	ation												
Annual and the selection of		All mental phenomena have mind as their forestyness they have mind as their (their fivey are mind-made. If one speaks or arts with an and mind. "Asklan," I follows him but as the sheak follows the booksets of														



पालि-पद-विवरिका (Pali Morphological Analyser)





Learning Pali









Visit our website for more details

http://learnpali.in#/home

or scan below QR code